20

विविधता की समझ

कक्षा-कक्ष में हम विभिन्न पृष्ठभूमि के अलग-अलग योग्यता, रुचि, अभिवृत्ति एवम् अभिक्षमता रखने वाले बच्चों के सम्पर्क में आते हैं। बच्चों की ऊपरी तौर से दिखने वाली समानता और एक समूह के तरह व्यवहार करने की प्रवृत्ति के बावजूद हर बच्चा अनूठा होता है और उसका अपना एक सीखने का तरीका और सीखने की आवश्यकताएँ होती हैं। कक्षाकक्ष बच्चों का वह घर है जहाँ विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और परम्पराओं से बच्चे आते हैं। किसी ईसीसीई कार्यकर्ता के लिये अनिवार्य है कि वह सीखने की अलग-अलग आवश्यकताओं से परिचित हो और दिन-प्रतिदिन की शिक्षण-अधिगम-गतिविधियों के नियोजन और क्रियान्वयन के लिये सीखने की आवश्यकताओं के निहितार्थों को समझ सके।

इस पाठ में आप विविधता के बुनियादी पहलू और विविधता को बढ़ावा देने वाले कारकों का अध्ययन करेंगे। सभी बच्चों के लिये समतामूलक और सुलभ ईसीसीई कार्यक्रम निर्माण के लिए शैक्षणिक आवश्यकताओं पर विविधता के महत्व और प्रभाव तथा इसके निहितार्थों का भी आप अध्ययन करेंगे।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- विविधता को परिभाषित करते हैं;
- विविधता को बढ़ावा देने वाले विभिन्न कारकों और उनके निहितार्थों की व्याख्या करते हैं;
- मातृभाषा तथा विद्यालय में अनुदेशन के माध्यम के बीच के अन्तर पर परिचर्चा करते हैं;
- बच्चों के विकास पर लिंग और जातिगत रूढ़ियों के प्रभावों का वर्णन करते हैं; और
- अधिगम में और खेलों में सभी की समतामूलक सहभागिता को प्रोत्साहित करने के तरीकों पर परिचर्चा करते हैं।

टिप्पणी

20.1 विविधता की समझ

आइए, एक कक्षाकक्ष से आरम्भ करें जहाँ अध्यापक द्वारा कक्षा में होने वाले शिक्षण और अधिगम को विभिन्न परिवारों द्वारा विभिन्न उत्सवों के अवसर पर खाये जाने वाले भोजन से सम्बद्ध किया जा रहा है।

कक्षाकक्ष का दृश्य–

आज सीमा बहुत उत्साहित है और लग रहा है कि वह अपनी अध्यापिका द्वारा दिए गए कक्षाकार्य पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम नहीं है। वह बेसब्री के साथ आज दोपहर के भोजनावकाश की प्रतीक्षा कर रही है क्योंकि पूरी कक्षा के साथ अपने पसंदीदा त्योहार के भोजन और त्योहार से सम्बन्धित विवरण साझा करने की आज उसकी बारी है। इस प्रकार उसके अध्यापिका ने भोजन पर आधारित पाठ को विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से सम्बद्ध किया। अध्यापिका ने विद्यार्थियों को इस तथ्य के प्रति संवेदनशील बनाने का भी प्रयास किया कि विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न लोग त्योहारों और विशेष अवसरों पर अलग-अलग प्रकार के भोज्यपदार्थों को देते हैं और स्वयम् खाते भी हैं।

आइए, अब हम कक्षाकक्ष के दृश्य पर प्रकाश डालते हैं।

- क्या कक्षा के सभी बच्चे इस गतिविधि में शामिल हो रहे हैं?
- क्या अध्यापिका बच्चों को कक्षा में उपस्थित विविधता के प्रति संवेदनशील बनाने में सक्षम है?

20.1.1 विविधता को परिभाषित करना

अँग्रेजी भाषा के 'डाइवर्सिटी' (diversity) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'डायवर्सस' (diversus) शब्द से हुई है जो कि भिन्नता की ओर संकेत करता है। डायवर्स का अर्थ है ''एक-दूसरे से भिन्न'' और ''अलग-अलग विशेषताओं, गुणों या तत्वों से बना हुआ''। भारत एक विशाल जनसंख्या वाला विशाल देश होने के नाते भौतिक विशेषताओं और सांस्कृतिक प्रतिमानों के अनगिनत प्रकार प्रस्तुत करता है। नस्ल, धर्म, जाति, भाषा आदि के सम्बन्ध में देखा जाए तो यह विविधता की भूमि है। विद्यालय में हम नस्ल, लिंग, आयु और सामाजिक स्तर के विभिन्न अस्तित्व देखते हैं। अत: हमें कक्षाकक्ष में इसके बारे में बताने के लिए तैयार होने की जरूरत है। पाठ के आरम्भ में जिस प्रकरण पर चर्चा की गयी उसमें सीमा की अध्यापिका द्वारा सांस्कृतिक और क्षेत्रीय भिन्नताओं की ओर ध्यानाकर्षित करने के लिये त्योहारों के भोजन को साझा करने के अभ्यास की जो पहल की गयी वह पाठ्यक्रम को दैनिक जीवन से सम्बद्ध करने के अतिरिक्त बच्चों को उनके साथियों के बीच उपस्थित विविधता के प्रति जागरूक बनाने के लिये की गयी एक सामान्य पहल है।

इसलिए विविधता में दृश्य और अदृश्य कारक समाहित है जिनमें व्यक्तिगत विशेषताएँ जैसे सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, संस्कृति, व्यक्तित्व और कार्यशैली सम्मिलित हैं।

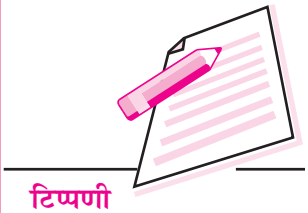

टिप्पणी

संक्षेप में, भिन्नताओं या अनूठी विशेषताओं के प्रति पूर्वाग्रह के बिना 'विविधता' शब्द अनूठेपन और भिन्नताओं की ओर संकेत करता है। व्यक्ति का मूल चाहे जो भी हो (नस्ल, जाति, भाषा आदि कुछ भी हो) विविधता व्यक्तिगत भिन्नताओं को मान्यता देती है, स्वीकार करती है और आदर भी प्रदन करती है।

विद्यालय में विविध समूहों की उपस्थिति सुरक्षित, सकारात्मक और पोषणीय वातावरण में पारस्परिक अधिगम, अन्वेषणों तथा उत्सव मनाने के अवसर प्रदान करती है। विविधता को विविध समूहों के सदस्यों के अनूठेपन और विशेषताओं के संग्रह के रूप से भी समझा जा सकता है। जो व्यक्ति चिन्तन, व्यवहार तथा कार्य में हमसे अलग हैं, उनके साथ कार्य करने के लिये विविधता को समझना महत्वपूर्ण है।

20.2 विविधता को बढ़ावा देने वाले कारक और उनके अधिगम संबंधी निहितार्थ

बहुत बारीकी और सही तरीके से गुँथी हुई विभिन्न संस्कृतियों की विशाल संख्या भारत की विविधता को विश्व के आश्चर्यों में से एक बनाती है। प्राय: जब लोग विविधता पर चर्चा करते हैं तब बातचीत धर्म और जाति पर ही केन्द्रित होती है। हालाँकि विविधता के बारे में सूक्ष्मता से बात करने के लिये, विशेष रूप से कक्षाकक्ष के सन्दर्भ में हमें और अधिक कारकों को स्वीकार करने की जरूरत है जैसे कि:

- नस्ल
- बहुभाषिकता
- नृजातीयता
- लिंग
- सामाजिक-आर्थिक स्तर
- आयु
- शारीरिक गतिविधियों के स्तर
- धार्मिक विश्वास
- अधिगम-शैली

ऊपर दी गयी सूची सम्पूर्ण नहीं है। इसमें और बहुत से कारकों को जोड़ा जा सकता है। आइए, अब हम समझते हैं कि इनमें से प्रत्येक कारक विविधता कैसे उत्पन्न करता है और हमारे विद्यालय और कक्षाकक्ष के वातावरण को किस प्रकार प्रभावित करता है?

नस्ल : नस्ल शारीरिक विशेषताओं जैसे–ऊँचाई, भार, आँखों के रंग, त्वचा आदि के आधार पर और साथ ही साथ सामाजिक व्यवहारों, मानकों, रीति-रिवाजों और प्रथाओं के आधार पर मानव-जाति का विभाजन है। यह एक वर्गीकरण प्रणाली है जिसे मनुष्य प्रजाति को शरीर-संरचना

या शारीरक गठन के सम्बन्धित शरीर-रचना की विशेषताओं के द्वारा पृथक जनसंख्या या समूहों में वर्गीकृत किया जाता है। यह अधिकांशत: वंशानुगत होता है और अभिभावकों द्वारा उनके बच्चों को स्थानान्तरित होता है। ये परिवर्तन भौगोलिक, ऐतिहासिक, भाषायी या धार्मिक सम्बन्धों के कारण से होते हैं।

गतिविधि 20.1

क्या आप अपने से अलग नस्ल के बच्चों के साथ हुई मुलाकात को याद कर सकते हैं? क्या आपने अपने और उनमें किसी प्रकार की समानता या अन्तर को देखा?

विभिन्न शारीरिक विशेषताओं वाले बच्चे कक्षा-कक्ष में होने वाली प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं कर सकते लेकिन कक्षा की गतिशीलता के लिये इनके निहितार्थ हो सकते हैं। जैसे कि लम्बे बच्चे प्राय: खेलकूद के लिये चयनित किये जाते हैं, गोरे रंग के बच्चे अपेक्षाकृत अधिक प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ प्राप्त करते हैं जबकि एक विशिष्ट रंग या आँखों के आकार वाले सरलता से दूसरों के द्वारा स्वीकृत नहीं किये जा पाते। राजा, रानी या परी के अभिनय के लिए गोरे रंग का बच्चा एक अध्यापक की पहली पसन्द होना अन्य बच्चों के मन में इस विचार का निर्माण कर सकता है कि राजा, रानी या परी गोरे रंग के होते हैं। यह रूढ़िबद्धता को जन्म देता है जो कि नहीं होना चाहिए। शारीरिक विशेषताओं में विविधता नस्ल से सम्बन्धित होती है जो कि एक प्राकृतिक घटना है और इसे स्वीकार किये जाने की जरूरत है।

जाति : भारत में जाति जन्म से निर्धारित वर्गीकरण की एक प्रणाली है। जाति को कठोर सामाजिक श्रेणियों की प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि रिवाजों, कानून या धर्म द्वारा अनुमोदित वंशानुगत स्तर और सामाजिक बाधाओं से निर्मित है। भारतीय सन्दर्भ में जाति एक ऐसे सामाजिक समूह की ओर संकेत करता है जिसकी सदस्यता जन्म से निश्चित होती है। जाति-समूह के सदस्य प्राय: अन्तर्विवाही होते हैं जो कि आपस में ही विवाह के लिये उन्मुख होते हैं। जाति को मुख्यत: निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है–

- अनुसूचित जाति
- अनुसूचित जनजाति
- अन्य पिछड़ा वर्ग
- अगड़ा वर्ग

सामाजिक रूप से जाति-प्रणाली में सामाजिक समूहों (जाति) के रूप में ऐसा विभाजन शामिल है जिसमें कर्तव्य और अधिकारों का निर्धारण जन्म से होता है जहाँ लचीलापन होना कठिन है। विभिन्न जातियों में बुनियादी अधिकार और कर्तव्य दोनों ही असमान और अधिक्रमिक हैं।

विद्यालय शिक्षा का स्थान है जहाँ समानता और समता को प्रचारित करना चाहिए और जाति आधारित भेदभाव को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। मध्याह्न-भोजन के वितरण के दौरान, बैठने की व्यवस्था में, बच्चों की अधिगम-गतिविधियो में, सहभागिता में विद्यालयों को भेदभाव से जुड़ कुछ मुद्दें का सामना करना होता है। विद्यालय-स्थल से सम्बन्धित एक अन्य परिस्थिति

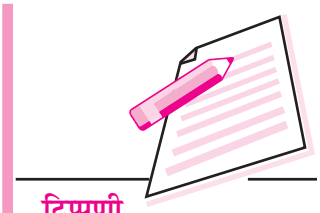

टिप्पणी

देखने में आती है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि जहाँ विद्यालय स्थापित किया जाना है वह स्थान यदि निम्न जाति के लोगों के निवास-स्थान के निकट है तब उच्च जाति के लोग अपने बच्चों को वहाँ भेजने के इच्छुक नहीं भी हो सकते हैं। इसके विपरीत परिस्थिति में, उच्च जाति के लोगों के निवास-स्थान के निकट स्थित विद्यालयों में पढ़ने में निम्न जाति के बच्चे शर्म, हतोत्साह और संकोच महसूस कर सकते हैं।

बहुभाषिकता : भारत में प्रत्येक राज्य की अपनी भाषा है। यह केवल उच्चारण मात्र नहीं है बल्कि यह बोली है जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बदल जाती है। बहुभाविकता एक वक्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से या वक्ताओं के समूह द्वारा विभिन्न भाषाओं का उपयोग करना या उपयोग को प्रोत्साहन देना है। एक से अधिक भाषाओं मे बोलने की योग्यता को वैश्विक स्तर पर आदर और सम्मान प्राप्त होता है। आजीविका की खोज में लोगों की गतिशीलता में वृद्धि के साथ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के बच्चे जो कि विभिन्न भाषायें बोलते हैं एक-दूसरे के साथ अध्ययन पूर्ण कर रहे हैं। शिक्षा के अधिकार के साथ सभी बच्चो के विद्यालय आने की आशा की जाती है। कई बार देखने में आता है कि मातृभाषा और विद्यालय की भाषा में अन्तर के कारण बच्चों को कक्षा में हो रहे शिक्षण को समझने में संघर्ष करना पड़ता है। अधिगम केवल तब ही प्रभावी हो सकता है जब विद्यालय में अनुदेशन का माध्यम तथा घर में प्रयुक्त भाषा समान हो। तभी विद्यालय छोड़ने वालों की दर में कमी आयेगी। अध्यापकों द्वारा मातृभाषा को आदर और स्वीकृति देते हुए विद्यालय में अनुदेशन की भाषा और मातृभाषा के बीच के विभाजन को धीरे-धीरे कम किया जाना चाहिए और दूसरी तथा तीसरी भाषा के अधिगम को सुविधाजनक बनाने में पहली भाषा की सामर्थ्य को आधार बनाया जाना चाहिए।

हम सभी सम्प्रेषण के लिये भाषा का उपयोग करते हैं लेकिन जो व्यक्ति ठीक तरह से सुन नहीं पाते हैं वे सम्प्रेषण हेतु सांकेतिक भाषा (sign language) का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार दृश्यता-सम्बन्धी कठिनाई वाले लोग लिखने के लिये और नोट्स लेने के लिये ब्रेल लिपि का उपयोग करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि देश की किसी अन्य भाषा के समान ही बहुभाषिकता का एक अन्य आयाम सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में सांकेतिक भाषा और ब्रेल लिपि को आदर और महत्व देना है।

नृजातीयता : नृजातीयता एक समान क्षेत्रीय और सांस्कृतिक परम्पराओं के सामाजिक समूह की सदस्यता का संकेत करती है। यह कारक पाठ्य-पुस्तकों, पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र के साथ ही साथ विद्यालय के दिन-प्रतिदिन के क्रियाकलापों को अत्यधिक प्रभावित करता है। प्रत्येक नृजातीय समूह की अपने रीति-रिवाज, कला एवं कलाकृतियाँ, वस्त्र-विन्यास शैली आदि होती है। इन समूहों से आने वाला बच्चा कक्षाकक्ष में विविध और समृद्ध अनुभवों को लाता है जोकि उसके साथियों के अनुभवों को भी समृद्ध बनाता है। इन स्थानीय रीति-रिवाजों और परम्पराओं का शिक्षा-प्रणाली पर सीधा असर पड़ता है। पाठ्य-पुस्तकें, पाठ्यक्रम, विद्यालय के कार्य दिवस, अवकाश-निर्धारण, विद्यालय-अवधि, अनुदेशन का माध्यम इत्यादि नृजातीयता से प्रभावित होते हैं। यह महत्वपूर्ण भी है कि पाठ्यक्रम और कक्षाकक्ष की प्रतिदिन की दिनचर्या में सांस्कृतिक कला एवं कलाकृतियों की विस्तृत श्रृंखला को एकीकृत किया जाए।

विद्यालय प्रशासन और अध्यापकों को उन तरीकों और साधनों को खोजने की जरूरत है जोकि

सभी नामांकित बच्चों के अधिगम-अनुभवों को सुविधाजनक बनाए और उनकी नृजातीयता को मान्यता दे।

कक्षाकक्ष में बच्चों को विभिन्न नृजातीय समूहों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए अध्यापक विशेष त्योहारों, भोजन-दिवस, देश-दिवस, कहानी-दिवस का आयोजन कर सकते हैं, अभिभावकों को निमन्त्रित कर सकते हैं और गतिविधि-पत्रक दे सकते हैं।

लिंग : आम आदमी लिंग को महिला और पुरूष के रूप में समझता है। एक लड़का या लड़की के सम्बन्ध में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान के रूप में लिंग को समझने की जरूरत है। सेक्स एक ऐसा शब्द है जो कि लिंग के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है और प्राय: लिंग के स्थान पर इसका उपयोग किया जाता है। सेक्स एक जैविक विशेषता है जबकि लिंग एक सामाजिक विशेषता है। सेक्स की जैविक विशेषता जीन्स, हार्मोन्स तथा स्त्री-पुरूष प्रजनन अंगों के द्वारा निर्धारित होती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान के रूप में लिंग को समझने में अपेक्षित सामाजिक विशेषताओं और लड़का या लड़की से अपेक्षित व्यवहार को समझने की जरूरत है। बच्चों की खिलौनों की वरीयता पैतृक रूप से उनके लिंग के प्रकार पर निर्भर करती है जैसे कि लड़कियाँ गुड़ियों के साथ खेलती हैं और लड़के खेलकूद में भाग लेते हैं। भारतीय सन्दर्भ में, माता-पिता दोनों ही लिंग आधारित भूमिका को अपने बच्चों में प्रोत्साहित करते हैं। लिंग की मूलभूत पहचान आमतौर पर तीन वर्ष से बनती है। इसके बाद इसे बदलना बहुत कठिन है और इसे बदलने का प्रयास कठिन हो सकता है। जैविक और सामाजिक दोनों ही कारक इसे प्रभावित करते हैं।

लड़के और लड़की के साथ व्यवहार में अन्तर समाज में उनकी अपेक्षित भूमिका के प्रति उनको संवेदनशील बनाता है। वे भूमिकाएं लिंग के बीच अवसरों की समानता को हमेशा बढ़ावा नहीं दे सकती हैं। कक्षाकक्ष में बालिकाओं की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति न केवल शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया को प्रभावित करती है बल्कि प्रशासन के सामने बालिकाओं के लिए भौतिक आधारभूत ढाँचे में सुविधाओं की व्यवस्था की माँग भी प्रस्तुत करती है। इसका सबसे बड़ा प्रकटीकरण उनके लिए अलग शौचालय का प्रावधान एवं लिंग-संवेदी मुद्दों में केन्द्र के मानव-संसाधन का विशेष प्रशिक्षण है।

शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में ऐसा संशोधन वांछित है जिसमें ऐसी अधिगम परिस्थितियों का निर्माण सम्मिलित है जहाँ दोनों लिंगों की समान सहभागिता सम्मिलित हो। इसी प्रकार ईसीसीई केन्द्र में जब बच्चों को शारीरिक सक्रियता हेतु प्रोत्साहित किया जाए तब अध्यापकों को ध्यान रखना चाहिए कि दौड़ने, चढ़ने, बैट-बॉल या फुटबाल आदि के साथ खेलने जैसी गतिविधियों में बालिकाओं की समान सहभागिता हो और गुड़ियों, किचन-सेट तथा गुड़िया-घरों के साथ खेलने में बालकों को शामिल किया जाए।

ग्रामीण क्षेत्रों और समाज के जो वर्ग हाशिये पर हैं, उनकी बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने की दर गम्भीर है। विद्यालयों को सुनिचित करना चाहिए कि बच्चियाँ सम्मान और सुरक्षा का अनुभव

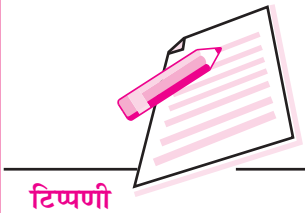

टिप्पणी

करें। यदि बालिका विकलांग है, किसी समस्या में है या वंचित अथवा कमजोर वर्ग से सम्बन्धित है तब उसे दुगने या तिगुने भेदभाव का सामना करना होता है। पहला क्योंकि वह बालिका है, दूसरा कि वह विकलांग है या समस्या में है और अन्तिम यह कि वह वंचित या कमजोर समुदाय में जन्मी है, इस प्रकार स्थिति और बिगड़ जाती है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर

सामाजिक-आर्थिक स्तर कक्षाकक्ष में विविधता के लिए उत्तरदायी महत्वपूर्ण कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है। जो निम्न या उच्च सामाजिक-आर्थिक समूहों से सम्बन्धित हैं उन्हें पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यक्रम और कक्षाकक्ष की गतिविधियों में उचित स्थान दिये जाने की जरूरत है। सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए चाहे उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। स्कूली बच्चों के लिए वेशभूषा सम्भवत: इसी दार्शनिक मान्यता के साथ आरम्भ की गयी थी।

सामाजिक-आर्थिक स्तर के कारण विविधता उन ईसीसीई केन्द्रों में और अधिक स्पष्ट हो जाती है जहाँ बच्चों से वेशभूषा में आने की आशा नहीं होती और वे कोई भी, घर में पहनने वाले या घर के कपड़े पहनने के लिये स्वतंत्र होते हैं। बच्चों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों में विविधता परिवार के आर्थिक और सामाजिक स्तर की ओर बहुत अधिक संकेत करती है। विद्यालय में बच्चों के बस्ते और लेखन-सामग्री (ज्यामितीय बॉक्स, खाने का डिब्बा, पेन्सिल, चित्र बनाने का सामान आदि) के लिये भी यह बात सही है। सामाजिक-आर्थिक स्तर के कारण विविधता को शिक्षण-अधिगम संसाधन के रूप में उपयोग में इस प्रकार लाया जा सकता है कि हर बच्चा कक्षाकक्ष में अपने साथ अपने अनुभवों को लाता है जिन्हें पढ़ाने और सिखाने में साझा किया जा सकता है और उपयोग में लाया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 20.1

निम्नलिखित की एक वाक्य में व्याख्या कीजिए–

(क) जाति

(ख) नस्ल

(ग) बहुभाषिकता

(घ) नृजातीयता

(ङ) लिंग

शारीरिक अशक्तता : शारीरिक अशक्तताओं का सम्बन्ध ऐसी क्षति से है जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक गतिविधियाँ कुछ सीमित हो जाती हैं। अशक्त बच्चों को शेष समूह के साथ शिक्षण-अधिगम गतिविधियों में सम्मिलित न किये जाने के लिए इन्हें बहाने के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। कक्षाकक्ष में अशक्त बच्चों की उपस्थिति शिक्षक और साथ ही साथ विद्यालय प्रशासन को व्यावसायिक तौर पर विकसित होने के अवसर प्रदान करती है।

शिक्षणशास्त्र में थोड़े से संशोधनों के साथ शारीरिक अशक्तता वाले बच्चों को कक्षाकक्ष की गतिविधियों में सरलता से सम्मिलित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कविता के समय के दौरान यदि अध्यापक सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है तब श्रवण दोष वाले बच्चों को भी गतिविधि में सम्मिलित किया जा सकता है। यह उनमें लय की समझ और अपनेपन को बढ़ावा देगा। दृष्टि दोष वाले बच्चों को ऐसा रंगने वाला पत्रक देकर रंगों से सम्बन्धित गतिविधियों में सरलता से शामिल किया जा सकता है जिसमें विभिन्न आकृतियों स्पर्शनीय हो और उन आकृतियों की सीमाएँ छोटी-छोटी लकड़ियों, धागे या किसी वस्तु को चिपकाकर बनायी गयी हो (उदाहरण के लिए वृत्त की आकृति के लिये चूड़ी)।

अध्यापक अभिभावकों से सामान्य शब्दों जैसे नहीं, हाँ, मैं चाहता हूँ, मैं पसन्द करता हूँ, मुझे जरूरत है, इत्यादि के लिये घरों में उपयोग में लाये जाने वाले संकेतों को भी सीख सकते हैं। कक्षाकक्ष में ये संकेत फ्लैश कार्ड या चित्रों के साथ प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिन्हें बच्चे अध्यापक और साथियों के साथ सम्प्रेषण के दौरान उपयोग में ला सकते हैं। सम्प्रेषण को सुविधाजनक बनाने के लिये एक सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ या विशिष्ट अध्यापक से भी सलाह ली जा सकती है।

अशक्त बच्चों के साथ व्यवहार करते समय हमारे शब्द और हमारा उन्हें सम्बोधित करने का तरीका बहुत महत्व रखता है। अशक्तता के प्रकार से पहले बच्चा शब्द का प्रयोग करना हमेशा ही उचित है। उदाहरण के लिए स्वालीन बच्चा कहने के स्थान पर 'बच्चा स्वालीनता के साथ' कहा जाए। कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :

'अशक्त बच्चे' के स्थान पर 'बच्चा अशक्तता के साथ' प्रयोग करें।

मानसिक रूप से मंद, मंद, जड़बुद्धि, मूर्ख इत्यादि के स्थान पर 'बच्चा बौद्धिक अशक्तता के साथ' प्रयोग करें।

'व्हील चेयर से बँधा हुआ' या 'व्हील चेयर तक सीमित' के स्थान पर 'बच्चा व्हील चेयर के साथ' प्रयोग करें।

'दृष्टिहीन बच्चे' के स्थान पर 'बच्चा दृष्टिहीनता के साथ' प्रयोग करें।

धार्मिक विश्वास : धार्मिक विश्वास ऐसे विश्वासों की ओर संकेत करता है जो कि ईश्वर, मानवता के निर्माण, अनुष्ठानों, उत्सवों आदि से सम्बन्धित हैं। सभी धर्मों को समान अधिकार प्राप्त हैं। सम्भवत: भारत संसार का ऐसा अकेला देश है जो कि अनेक धर्मों जैसे– हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिक्ख, जैन, बौद्ध, पारसी आदि का घर है। बहुत से लोगों के लिये धर्म उनके दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। धार्मिक मूल्य, विश्वास, प्रथाओं आदि को बच्चे के परिवार द्वारा ही सिखाया जाता है।

बच्चे घर और समुदाय से धार्मिक रिवाजों के अपने अनुभव कक्षाकक्ष तक लाते हैं। बच्चों को इन भिन्नताओं को स्वीकार करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए बल्कि इन भिन्नताओं की प्रशंसा भी की जानी चाहिए। प्रत्येक धर्म का अपना उत्सवों का समूह होता है जिसे उनके विशिष्ट अनुष्ठानों तथा सजावट द्वारा पहचाना जा सकता है। धार्मिक विश्वासों में उपस्थित

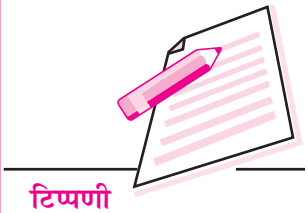

टिप्पणी

विविधता अध्यापक को धर्मनिरपेक्षता के विचार को बढ़ावा देने का और बच्चों को यह पढ़ाने का अवसर प्रदान करती है कि सभी धर्म समान हैं तथा सभी के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्हें कला, कविता, कहानी द्वारा या फिर मौखिक रूप से आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने की जरूरत है। कक्षाकक्ष में विभिन्न धर्मों के प्रमुख त्योहार पर निम्नलिखित सन्दर्भों में चर्चा की जा सकती है–

- कब आयोजित जाता है?
- कैसे आयोजित किया जाता है?
- कौन-सा विशेष भोजन तैयार किया जाता है?
- आयोजन में उनकी क्या भूमिका होती है?
- आयोजन के दौरान वे कैसा महसूस करते हैं?

गतिविधि 20.2

अपने पड़ोस का एक विविधता प्रोफाइल तैयार कीजिए। इसे तैयार करने में निम्नलिखित प्रारूप उपयोगी हो सकता है।

विविधता के कारक	परिवारों की संख्या
नस्ल	
नृजातीयता	
लिंग	
धर्म	

संज्ञानात्मक शैली : यह अधिगम को आत्मसात करने और शैक्षणिक हस्तक्षेपों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रियाओं के तरीकों में भिन्नताओं की ओर संकेत करता है। प्रत्येक बच्चे की अधिगम की एक विशेष शैली होती है जो कि उसने अपने व्यक्तित्व और मिलने वाले अवसरों के साथ-साथ सीखने के संसाधनों तक उसकी पहुँच पर निर्भर होती है। संज्ञानात्मक शैली में भिन्नता कक्षा में विविधता लाती है और शैक्षणिक प्रशासकों के साथ-साथ अध्यापकों के लिए इसके अपने निहितार्थ हैं। कक्षाध्यापक को कक्षा में सभी बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली शिक्षण विधियों को अपनाया चाहिए। विभिन्न अधिगम शैलियों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए किसी प्रत्यय का शिक्षण करना पूरी कक्षा को लाभ पहुँचाता है। इसके लिए एक ही बात को सिखाने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करना, परिणामस्वरूप पुनर्बलन देना तथा और अच्छे तरह से सीखने को बढ़ावा देना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, एक कहानी सुनाते समय सुनाने के साथ एक कहानी की पुस्तक का उपयोग कर सकता है। यह श्रवण अधिगमकर्ता (सुनकर सीखने वाले) तथा दृश्य अधिगमकर्ता (देखकर सीखने वाले)

टिप्पणी

दोनों प्रकार के अधिगमकर्ताओं की आवश्यकता को पूर्ण करेगा। श्रवण अधिगमकर्ता सुनने का आनन्द लेंगे जबकि दृश्य अधिगमकर्ता पुस्तक के शब्दों और चित्रों का वर्णन के साथ आनन्द उठायेंगे।

कक्षा-कक्ष की विविधता के शैक्षिक और सामाजिक एवं संवेगात्मक दोनों प्रकार के लाभ हैं। बच्चों के लिये अध्यापकों को विविध अधिगम अवसरों के निर्माण को महत्व देना चाहिए जिससे कि बच्चों को विविध अनुभव मिल सकें। यह उनके विकास पर प्रभाव डालेगा और समाज को भी अत्यधिक प्रभावित करेगा।

पाठगत प्रश्न 20.2

बताइए कि निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं या असत्य–

(क) बच्चों को उनके धार्मिक विश्वासों को साथियों के सामने अभिव्यक्त करने या उनके साथ साझा करने के लिये हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

(ख) हर बच्चे का अपना एक सीखने का तरीका होता है।

(ग) श्रवण अधिगमकर्ता कहानियाँ सुनने में आनन्द लेते हैं।

(घ) बच्चे समूह में परिचर्चाओं और वाद-विवाद द्वारा सीखते हैं।

(ङ) बच्चे अपने धार्मिक रिवाजों के अनुभव विद्यालय से घरों को ले जाते हैं।

20.3 मातृभाषा और विद्यालयी भाषा के मध्य विभाजन

भारत एक बहुभाषी देश है और संविधान भारत की बहुभाषिक प्रकृति की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। भाषायी विविधता के सन्दर्भ में यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। मातृभाषा और विद्यालयी भाषा का विभाजन उस परिस्थिति की ओर संकेत करता है जहाँ विद्यालय के अनुदेशन का माध्यम घर में प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा से अलग है। उदाहरण के लिए, विद्यालय अनुदेशन के माध्यम के रूप में अँग्रेजी का उपयोग कर सकता है जबकि बच्चा और उसका परिवार एक-दूसरे के साथ तथा पड़ोसियों से सम्प्रेषण हेतु तमिल का उपयोग करते हों।

घर और विद्यालय के बीच विभाजन के कारण हो सकते हैं:

- परिवार देश के एक भाग से दूसरे भाग में जाकर रहने लगे।
- क्षेत्र में अनुदेशन के माध्यम के रूप में मातृभाषा का उपयोग करने वाले विद्यालय की उपलब्धता न हो।
- स्थानीय बोली को विद्यालय में आवश्यक महत्व न मिलता हो।
- प्रथम पीढ़ी का अधिगमकर्ता होना (ऐसा बच्चा जिसके परिवार में पहले किसी ने शिक्षा न पायी हो)।
- अध्यापक विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि के हों।

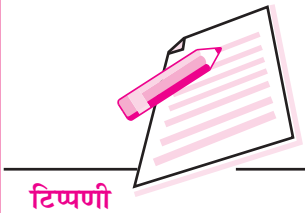

टिप्पणी

20.3.1 बच्चों पर मातृभाषा और विद्यालयी भाषा के मध्य विभाजन का प्रभाव

- साथियों को मित्र बनाने में समर्थ न होना।
- शैक्षणिक कार्यों में अच्छे अंक लाने/उपलब्धि में/निष्पादन में समर्थ न होना।
- बार-बार असफलता और खराब प्रदर्शन के कारण आत्म-सम्मान में कमी आना और विद्यालय छोड़ने की दर उच्च होना।
- निम्न आत्म-विश्वास।
- विद्यालय और शैक्षणिक कार्यों से लगाव में कमी।
- पढ़ने, लिखने और अभिव्यक्ति में समर्थ न होना।
- बच्चों के विद्यालय में नामांकन तथा सफलता की सम्भावना का कम होना।
- अभिभावकों में उनके बच्चों की अधिगम-प्रक्रिया में सहभागिता में सम्भावना का कम होना है।
- बच्चों में उनकी अपनी पहचान और विरासत के प्रति गर्व का अभाव।

एनसीएफ 2005 भारतीय समाज की बहुभाषी प्रकृति का सम्मान करता है और सुझाव देता है कि इसे बच्चे में बहुभाषी प्रवीणता को बढ़ावा देने वाले संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए। आदिवासी सहित सभी भाषाओं के साथ-साथ अँग्रेजी को समान महत्व दिया जाना चाहिए। छोटे बच्चे और विद्यालय के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में सभी मातृभाषाओं को महत्व दिया जाता है। प्रथम पीढ़ी के अधिगमकर्ता के मामले में आरम्भिक वर्षों में शिक्षण मातृभाषा में होना चाहिए और दूसरी तथा तीसरी भाषा को सीखने के लिये कम दबाव होना चाहिए क्योंकि हो सकता है कि घर पर इन भाषाओं को सीखने के लिये कोई सहायता न मिले।

इस तरह के विभाजन की अनुपस्थिति इंगित करती है:

- विद्यालयी शिक्षा मनोरंजक और आनन्ददायी अनुभव बन जाता है।
- बच्चों के आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है।
- बच्चे विद्यालयी अनुभवों के साथ जुड़ पायेंगे और इस कारण से 'मेरा विद्यालय' की एक अपनेपन की भावना विकसित होगी।
- साथियों के साथ मित्रता होती है जिससे सामाजिक समावेशन और अन्तर्क्रिया बढ़ती है।
- बच्चे अध्यापकों और अन्य लोगों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं।
- विद्यालय में अधिक देर तक रूकने की प्रवृत्ति का विकास होता है।
- बच्चे बाहरी दुनिया से सम्बन्ध बनाने में सक्षम होते हैं।
- शिक्षा की पहुँच बढ़ती है।

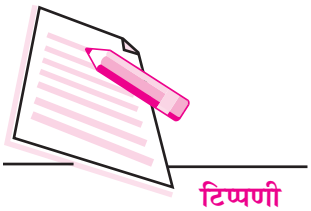

टिप्पणी

- प्राथमिक विद्यालय की अवधि में बेहतर अधिगम प्रतिफल।
- स्थानीय भाषाओं की सुरक्षा एवं संरक्षण में सहायता मिलती है।

प्राथमिक विद्यालयों में मातृभाषा को अनुदेशन के माध्यम के रूप में अपनाकर मातृभाषा और विद्यालयी भाषा के बीच के अन्तर को एक बड़ी सीमा तक कम किया जा सकता है और धीरे-धीरे मातृभाषा से हटते हुए दूसरी और तीसरी भाषा सीखना आरम्भ करना चाहिए। स्थानीय कहानियाँ, गीत, चुटकुले और पहेलियाँ, कला आदि स्थानीय समुदायों के समृद्ध सांस्कृतिक संसाधन हैं जिन सभी का उपयोग भाषा और ज्ञान की समृद्धि के लिये किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 20.3

सही विकल्प का चयन करें और रिक्त स्थान भरें–

(क) प्री-स्कूल और प्राथमिक विद्यालयों में मातृभाषा का उपयोग ..... की कमी को बढ़ावा देगा। (धारण/ड्रापआउट्स)

(ख) प्री-स्कूल में मातृभाषा का उपयोग ..... की भावना को बढ़ावा देने में सहायता हेतु महत्वपूर्ण है। (गर्व/अपनेपन)

(ग) यदि भोजपुरी अनुदेशन का माध्यम हो और अभिभावक घर पर अँग्रेजी बोलते हों तब यह स्थिति घर और विद्यालय के मध्य ..... की होगी। (भाषायी विभाजन/भाषायी एकता)

(घ) मातृभाषा वह भाषा है जो ..... पर बोली जाती है। (घर/विद्यालय)

(ङ) अनुदेशन का माध्यम वह है जो ..... में उपयोग की जाती है। (घर/विद्यालय)

20.4 बच्चों पर लैंगिक और जातिगत रूढ़ियों का प्रभाव

20.4.1 रूढ़ियाँ

सभी समाजों में रूढ़ियाँ विद्यमान होती हैं। रूढ़ियाँ एक समूह के लोगों के बारे में निश्चित विचार या मान्यताएँ हैं। ये निश्चित विचार पर रूढ़ियाँ या मान्यताएँ जरूरी नहीं है कि सही हों या सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत हों। कई बार हम एक-दूसरे को कैसे समझें यह लोगों के बारे में निश्चित लक्षणों जैसे– नस्ल, लिंग, आयु, जाति, धर्म आदि पर आधारित अति सरलीकृत मान्यताओं के द्वारा निर्धारित किया जा सकता है। कोई व्यक्ति ऐसे समूह से आता है जिसके बारे में कोई रूढ़ि बनी हुई है तो उस व्यक्ति में उस रूढ़ि के लक्षणों के होने की आशा की जाती है। उदाहरण के लिए, यदि हम एक निश्चित जाति के कुछ लोगों से मिलते हैं एवं बातचीत करते हैं और उनमें कुछ लक्षण और आदतें दिखाई देती हैं तब हम एक विश्वास विकसित करते हैं कि इस जाति में यह लक्षण होते हैं जबकि यह सभी सदस्यों के लिये सही नहीं हो सकता है। रूढ़िवादी विश्वास कठोर होते हैं लेकिन समय के साथ वे बदलते हैं और बदल जाते हैं। रूढ़ियाँ हमेशा स्वाभाविक रूप से नकारात्मक ही नहीं होती लेकिन क्योंकि वे

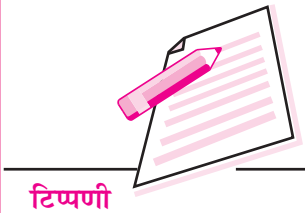

टिप्पणी

ऐसी मान्यताएँ हैं जो व्यक्ति की व्यक्तिगत और जन्मजात योग्यताओं, अवसरों और वातावरण की अवहेलना करती हैं इसलिए वे पूर्वाग्रह बनती जाती हैं। नकारात्मक रूढ़ियाँ विकल्पों और अवसरों को सीमित कर लोगों को उनकी सम्भावनाओं को पूरा करने की क्षमता में बाधा पहुँचाती हैं। ये प्रकट और अप्रकट, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तथा बारबार होने वाले भेदभाव की जड़ में हैं।

20.4.2 लैंगिक रूढ़ियाँ

लैंगिक रूढ़ि का संबंध बालक और बालिकाओं के साथ जुड़े व्यवहार से सम्बन्धित है जो कि स्त्री और पुरुष की विशेषताओं के बारे में विश्वास का निर्माण करता है। स्त्री और पुरुष की रूढ़िबद्ध भूमिकाएँ और लोगों का किसी निश्चित जाति या प्रकार के होने के विचार को मीडिया द्वारा गीतों, फिल्मों, विज्ञापनों आदि के द्वारा और अधिक दृढ़ बनाया जाता है। समाज द्वारा स्त्री और पुरुष में जिन विशेषताओं की आशा की जाती है उनके उदाहरण निम्नलिखित सूची द्वारा दिये गये हैं–

स्त्री	पुरुष
निर्भर	स्वतन्त्र
कमजोर	शक्तिशाली/मजबूत
कम महत्वपूर्ण	अधिक महत्वपूर्ण
संवेगात्मक	तार्किक
कार्यान्वयन–कर्ता	निर्णयकर्ता
घर की देखभाल करने वाली, गृहणी	कमाने वाला
समर्थक	नेतृत्व कर्ता
भयभीत	बहादुर

अध्यापकों को किसी भी रूढ़िवादिता को बढ़ावा न देने और जो कोई उपस्थित हो उसकी पुष्टि के न करने के प्रति सचेत रहना चाहिए।

20.5 अधिगम तथा खेल में सभी की लिंग आधारित समतामूलक सहभागिता को प्रोत्साहन

लैंगिक समानता को प्रोत्साहन देना विद्यालयों का उत्तरदायित्व है। वे इसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न विधियों और प्रविधियों को अपना सकते हैं। केन्द्र पर नियोजित अधिगम तथा खेल सम्बन्धी सभी गतिविधियों का उद्देश्य इस लक्ष्य की प्राप्ति होनी चाहिए।

जिन कुछ विधियों को अपनाया जा सकता है, वे हैं :

टिप्पणी

20.5.1 उचित खिलौने/टीएलएम का चयन

प्राय: ईसीसीई केन्द्र खेल और खिलौनों पर बहुत निर्भर करता है। ये खिलौने लिंगानुकूल केन्द्र के निर्माण में सार्थक भूमिका निभा सकते हैं। खिलौनों या खेल सामग्री द्वारा शिक्षण सम्बन्धी कौशलों में एक ईसीसीई अध्यापक को गहरी दिलचस्पी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, एक गेंद गत्यात्मक कौशलों के विकास तथा गोले के बारे में पढ़ाने के लिए उपयोगी में लायी जा सकती है। एक गुड़िया शरीर के अंगों के बारे में शिक्षण करने में सहायता करेगी। एक लिंग-संवेदी अध्यापक बच्चे के खेलने के लिए एक गुड़िया, एक कार या इमारत के ब्लॉक आदि का चयन प्रत्येक खिलौने द्वारा विकसित होने वाले कौशल के आधार पर करेगा न कि बच्चे के लिंग के अनुसार। अध्यापक लिंग-तटस्थ खिलौनों जैसे पहेलियों, ब्लॉक, मिट्टी आदि का चयन दोनों लिंगों के उपयोग और उनके साथ खेलने को प्रोत्साहित करने के लिए कर सकता है।

20.5.2 कहानी कथन

बच्चों को कहानियाँ सुनने और सुनाने में आनन्द आता है। कहानियाँ भाषा-विकास का एक अवसर प्रदान करती हैं और पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को रुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करतीं हैं। लिंग के प्रति समतामूलक एवं संवेदनशील कक्षाकक्ष के निर्माण में सावधानी के साथ चयनित कहानियाँ सहायता करेंगी। कहानी निर्धारित करते समय कहानी के पात्रों, कहानी में किस प्रकार विभिन्न लिंगों को चित्रित किया गया है और बालक तथा बालिकाओं की विशेषताओं का ध्यान देना चाहिए। क्या कहानी में सभी पुरुष घर के बाहर खेत, कारखाने या कार्यालय में कार्य कर रहे हैं? क्या सभी महिलाओं को गोरा और सुन्दर दर्शाया गया है? क्या परियाँ हमेशा बालिकाएँ होती हैं? क्या विशाल आकार के पुरुष सदैव खलनायक होते हैं? क्या बालिकाओं को हमेशा रसोई का काम करने वाली, गृहस्थी का काम करने वाली के रूप में दर्शाया गया है?

कहानी कहने के बाद पात्रों की विपरीत भूमिका से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर बच्चों को परिचर्चा में सम्मिलित करना चाहिए। एक ऐसी कहानी सुनाएँ जिसमें पिता के स्थान पर माँ कार्यालय जाती हो और पिता खाना तैयार करता हो। माँ बाजार सामान लेने जाती हो और पिता घर की सफाई करता हो। माँ के अभिभावक परिवार के साथ रहते हों, आदि।

20.5.3 निष्पक्ष खेल को प्रोत्साहन

बालिकाओं को रसोई के सामान के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करने के स्थान पर सभी खिलौने ऐसे व्यवस्थित करें कि सभी बच्चों की सरलता से पहुँच में हों और विशेष लिंग के बच्चों को बताए बिना विकल्प चुनने की अनुमति प्रदान करें कि किसके साथ खेलना है और किसके साथ नहीं खेलना है। बच्चों को निर्णय लेने दें कि वे किसके साथ खेलना चाहते हैं। सभी बच्चों को रसोई के सामान, गेंद, झूले आदि के साथ खेलने के लिए सुनिश्चित समय प्रस्तावित करें। बाहर के खेलों जैसे क्रिकेट, हॉकी, खो-खो, कबड्डी, फुटबॉल आदि के लिए सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करें।

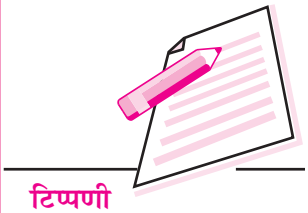

टिप्पणी

20.5.4 मित्रता को प्रोत्साहन

बच्चों को दोनों प्रकार के लिंगों के साथ मित्रता के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बालक और बालिका के एक साथ खेलने को अगर कोई वयस्क ''एक सुन्दर जोड़ा' कहता है तो यह मित्रता के लिये अनावश्यक तनाव, ध्रुवता (अपने ही लिंग की ओर झुकाव) और भ्रम उत्पन्न करने वाला हो सकता है। लिंग आधारित टोली-निर्माण के सरल तरीके के चयन के स्थान पर जिन टोलियों में बालक और बालिकाएँ दोनों हों ऐसे टोली आधारित खेल को प्रोत्साहित करें।

20.5.5 लिंग-आधारित कार्य-वितरण की उपेक्षा

दोपहर के भोजन के वितरण के समय या खिलौनों की व्यवस्था करते समय जब आपको स्वयंसेवकों की तलाश होती है तब बच्चों को कार्य हेतु स्वयंसेवा की अनुमति प्रदान करें। बालक भोजन और प्लेट्स के वितरण में रुचि प्रदर्शित कर सकते हैं और बालिकाएँ खिलौनों की व्यवस्था में। यदि आप लैंगिक विभाजन देखें तब आप लैंगिक समानता को एक अनुरोध के साथ प्रोत्साहित कर सकते हैं, जैसे– ''रोहित'', क्या तुम भोजन/प्लेट्स/चम्मच आदि को वितरित करने में मेरी सहायता करना चाहोगे? या ''टिन्नी'', क्या तुम खिलौनों को सुव्यवस्थित करने में मेरी सहायता करना चाहोगी?

पाठगत प्रश्न 20.4

नीचे सूचीबद्ध की गई प्रत्येक परिस्थिति में एक अध्यापक द्वारा लिंग की समतामूलक सहभागिता को प्रोत्साहित करने के किसी एक तरीके की सूची बनाएँ–

(क) खिलौनों का चयन

(ख) कहानी कथन

(ग) उचित खेल

(घ) मित्रता

(ङ) कार्य वितरण

आपने क्या सीखा

- विविधता : अर्थ और महत्व
- भिन्नताओं को स्वीकार करना और प्रशंसा करना
- विविधता को बढ़ाने वाले कारक और अधिगम में उनके निहितार्थ
- नस्ल

- बहुभाषिकता
- नृजातीयता
- लिंग
- लैंगिक झुकाव
- सामाजिक-आर्थिक स्तर
- आयु
- धार्मिक विश्वास
- अधिगम शैली
- मातृभाषा और विद्यालयी भाषा का विभाजन
- बच्चों पर लैंगिक और जतिगत रूढ़ियों का प्रभाव
- अधिगम तथा खेल में सभी बच्चों के लिये लिंग की समतामूलक सहभागिता को प्रोत्साहन
  - खिलौने का चयन
  - कहानी कथन
  - निष्पक्ष खेल को प्रोत्साहन
  - मित्रता को प्रोत्साहन
  - लिंग-आधारित कार्य-वितरण की उपेक्षा

पाठान्त प्रश्न

1. विविधता शब्द से आप क्या समझते हैं? अपने आस-पड़ोस के बच्चों में आपने कितने प्रकार की विविधता को देखा है? विविधता को बढ़ावा देने वाले मुख्य कारक कौन से हैं?
2. प्री-स्कूल में बच्चों की समतामूलक लैंगिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये आप कौन से कदम उठायेंगे?
3. बचपन के अनुभव सांस्कृतिक और लैंगिक मुद्दों से किस प्रकार प्रभावित होते हैं?
4. एक ईसीसीई केन्द्र के लिये बहुभाषिकता के क्या निहितार्थ हैं? बहुभाषिकता के कारण उत्पन्न विविधता को स्वीकार करने और सम्मान देने के तरीकों की सूची बनाइए।
5. आदिवासी बच्चों के मध्य कार्य करते समय आपके द्वारा मातृभाषा और विद्यालयी भाषा के बीच के विभाजन को दूर करने के लिये कौन-से कदम उठायेंगे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

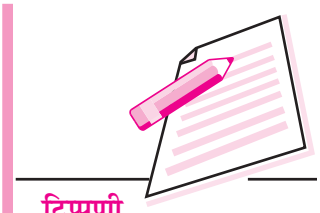

टिप्पणी

20.1

(क) जाति : यह जन्म के आधार पर वर्गीकरण की एक प्रणाली है।

(ख) नस्ल : नस्ल शारीरिक विशेषताओं के आधार पर मानव-जाति का विभाजन है।

(ग) बहुभाषिकता : व्यक्तिगत वक्ता या वक्ताओं के समूह द्वारा अनेक भाषाओं के उपयोग करने या उपयोग को प्रोत्साहन देना।

(घ) नृजातीयता : ऐसे सामाजिक समूह या सम्बद्धता जिसकी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक परम्पराएँ एक हों।

(ङ) लिंग : लिंग एक बालक या एक बालिका/पुरुष/स्त्री होने से सम्बन्धित सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान की ओर संकेत करता है।

20.2

(क) असत्य

(ख) सत्य

(ग) सत्य

(घ) सत्य

(ङ) असत्य

20.3

(क) ड्रापआउट्स

(ख) अपनेपन

(ग) भाषायी विभाजन

(घ) घर

(ङ) विद्यालय

20.4

(क) **खिलौनों का चयन :** खिलौने द्वारा विकसित होने वाले कौशल के आधार पर खिलौने का चयन करें न कि बच्चे के लिंग के अनुसार।

(ख) **कहानी कथन :** कहानी में लिंगों के चरित्र की विशेषताओं पर ध्यान दें।

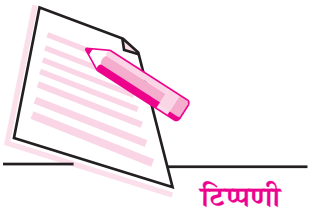

(ग) **निष्पक्ष खेल :** बच्चों को बिना उनके लिंग के सन्दर्भ के सभी गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करें तथा विकल्प चुनने की अनुमति प्रदान करें।

(घ) **मित्रता :** ध्रुवता से बचें और दोनों लिंगों के बीच मित्रता को प्रोत्साहन दें।

(ङ) **कार्य वितरण :** निश्चित लिंग के बच्चे को निश्चित कार्य करने के लिये न कहें। बच्चों को स्वयं चुनने दें और स्वयं कार्य करने दें।

सन्दर्भ

- Bharti. (2018). Making Primary Schools Inclusive Indian Perspective. New Delhi: Global Books Organisation.
- Disconnect of Home Language vs. School Language - schoolsnotfactories. (n.d.). Retrieved from https://sites.google.com/site/schoolsnotfactories/classroom-ideas/disconnect-of-home-language- vs-school-language
- Meena, K. (2015, June 7). Diversity Dimensions of India and Their Organization Implications: An Analysis. Retrieved from https://www.omicsonline.org/open-access/diversity-dimensions-of-india-and-their-organization-implications-an-analysis-2162-6359-1000261.php?aid=54873
- Ways You Can Promote Gender Equality In Your Classroom. (2019, September 19). Retrieved from https://www.teachthought.com/education/6-ways-can-promote-gender-equality-classroom/
- What is Diversity?: Understanding Diversity & its types in India. (2019, September 12). Retrieved from https://www.toppr.com/guides/civics/understanding-diversity/what-is-diversity/